अजीब सी दुनिया है यहां
लोग मिलते कम हैं,
झाँकते ज्यादा है।
– अज्ञात

शिक्षा की बेहद चिंताजनक तस्वीर

सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 20 फीसदी बच्चों के पास पाठ्यपुस्तकें ही नहीं हैं। यह राष्ट्रीय औसत है। अलग-अलग राज्यों का हाल देखना हो तो राजस्थान में पाठ्यपुस्तकों से वंचित बच्चों का प्रतिशत 40 है जबकि आंध्र प्रदेश में 65 से भी ज्यादा।

नवीन शाह।।

ऐनुअल स्टेट ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट यानी असर का ताजा सर्वे मौजूदा स्कूली शिक्षा की बेहद चिंताजनक तस्वीर पेश करता है। यह सर्वे पिछले महीने यानी सितंबर में किया गया, जब कोरोना के चलते स्कूलों को बंद हुए छह महीने हो चुके थे। सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 20 फीसदी बच्चों के पास पाठ्यपुस्तकें ही नहीं हैं। यह राष्ट्रीय औसत है। अलग-अलग राज्यों का हाल देखना हो तो राजस्थान में पाठ्यपुस्तकों से वंचित बच्चों का प्रतिशत 40 है जबकि आंध्र प्रदेश में 65 से भी ज्यादा। जिस हफ्ते में यह सर्वे किया गया, तब तक की स्थिति यह थी कि एक तिहाई ग्रामीण बच्चों की कोई लर्निंग एक्टिविटी नहीं हुई थी जबकि दो तिहाई बच्चों को स्कूल से कोई लर्निंग मैटेरियल नहीं मिला था। लाइव ऑनलाइन कक्षाओं की बड़ी चर्चा है, लेकिन वहां तक पहुंच केवल दस फीसदी ग्रामीण बच्चों की ही दर्ज की जा सकी।

आम चलन के मुताबिक इसके पीछे टेक्नॉलजी की सीमित पहुंच को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा, लेकिन असर की यह रिपोर्ट जोर देकर कहती है कि मामला सिर्फ टेक्नॉलजी का नहीं है। हाल के दिनों में वैसे भी स्मार्टफोन का मार्केट बढ़ा है। देश में 2018 के मुकाबले स्मार्टफोन धारकों की संख्या करीब-करीब दोगुनी हो गई है। रिपोर्ट के मुताबिक करीब एक तिहाई बच्चे ऐसे हैं जिनकी स्मार्टफोन तक पहुंच होने के बावजूद लर्निंग मैटेरियल नहीं मिल सका। इस बीच सरकार ने तमाम सावधानियों के साथ स्कूल खोलने की इजाजत दे दी है, फिर भी ज्यादातर बच्चों ने स्कूल जाना शुरू नहीं किया है। अभिभावकों के मन में बैठा डर उन्हें बच्चों को स्कूल भेजने से रोक रहा है। उन्हें पता है कि बच्चों को लाख ध्यान दिलाया जाए तो भी वे न तो मुंह पर मास्क लगाए रख पाएंगे, न ही दोस्तों से डिस्टेंस मेनटेन करेंगे। यह डर वास्तविक है और रातोंरात नहीं छंटने वाला। यानी देश के ज्यादातर बच्चों के कोरोना से पहले वाले स्तर की शिक्षा तक दोबारा पहुंचने में अभी वक्त लगेगा। और यह स्थिति उन बच्चों की है जो स्कूली शिक्षा व्यवस्था के दायरे में शामिल हैं।

सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक देश में 6 से 10 साल की उम्र के 5.3 फीसदी ग्रामीण बच्चे ऐसे हैं जिनका किसी स्कूल में ऐडमिशन ही नहीं हुआ। आंकड़े की अहमियत तब समझ में आती है जब हम देखते हैं कि 2018 में ऐसे ग्रामीण बच्चों का प्रतिशत महज 1.8 था। संयोग कहिए कि इसी साल केंद्र सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी लेकर आई है जिसमें बच्चों को सिखाने के नए-नए तरीकों पर कई मौलिक सुझाव दिए गए हैं। मगर कोरोना से उपजी स्थितियों ने ग्रामीण बच्चों को जितना पीछे धकेल दिया है, वहां से इनको सामान्य स्तर तक लाने के लिए जल्द ही एक विशेष नीति की जरूरत पड़ेगी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर अमल कुछ समय बाद भी शुरू हो तो कोई हर्ज नहीं।

संवाद

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

उत्तर रामायण में गरुड़ और काकभुशुण्डि का संवाद है इसीलिए ये महर्षि वाल्मीकि की मूल रचना नही मानी जाती। इसीलिए जब आप महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित मूल रामायण के पहले ६ कांड पढ़ेंगे तो उनमें और उत्तर रामायण की लेखन शैली और भाषा में धरती-आकाश का अंतर पाएंगे। इसके अतिरिक्त मूल वाल्मीकि रामायण महाकाव्य (पद्य) के रूप में है किंतु उत्तर कांड में, विशेषकर सभी अनर्गल कथाओं में गद्य की अधिकता है। इसी कारण ये मूल रामायण से बहुत अलग दिखाई पड़ता है। कुछ लोगों का मानना है कि मूल वाल्मीकि रामायण के साथ छेड़ छाड़ करीब ५०० वर्ष पूर्व की गयी जब बौद्ध और जैन धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए इसमें कुछ छेड़-छाड़ की गयी।

संपादकीय

सिंधु का लंदन जाना

रियो ओलिंपिक 2016 में रजत पदक जीतने वाली पीवी सिंधु आजकल लंदन में अभ्यास कर रही हैं जबकि बाकी शटलर हैदराबाद शिविर में भाग ले रहे हैं। सिंधु के लंदन जाने के संबंध में उनके पिता पीवी रमन्ना ने आरोप लगा दिया कि यहां सिंधु की तैयारियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा था। इससे माहौल गरम हो गया था लेकिन सिंधु ने इसका खंडन करके फिलहाल स्थिति को संभाल लिया है। हम कुछ ही समय बाद ओलिंपिक साल में प्रवेश करने वाले हैं। इसलिए एकजुटता बनाए रखने की जरूरत है क्योंकि तनाव से प्रदर्शन में भी गिरावट आ सकती है। बाकी खेलों में भी खिलाड़ियों ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। अब तक 42 पुरुष और 32 महिला खिलाड़ियों ने टोक्यो ओलिंपिक का टिकट कटाया है। ाारत को इस बार निशानेबाजी में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है। इसकी वजह पिछले दो-तीन सालों में यंग ब्रिगेड का इस खेल पर छा जाना है। हमने पिछले दो सालों में विश्व कपों में जितने गोल्ड जीते हैं, उतने उससे पहले के 30 सालों में भी नहीं जीते थे। कोरोना की वजह से सभी गतिविधियां थमी रहने के दौरान भी निशानेबाज जूम के माध्यम से कोचों से जुड़े रहकर फिटनेस पर काम कर रहे थे। अब सबसे बड़ी जरूरत निशानेबाजों को रंगत दिलाने की है। इसके बाद उन्हें जितना संभव हो सके विश्व कपों में शिरकत के जरिए अभ्यास कराना होगा। हम ऐसा कर सके तो अच्छे परिणाम आने तय हैं। अगले साल ओलिंपिक क्वॉलिफायर शुरू होने पर इस संख्या में इजाफा हो सकता है और यह 100 को पार कर सकती है।

इसका सीधा सा मतलब है कि हमारे खिलाड़ियों और टीमों की तैयारियां शुरुआती चरण में हैं और इनको पूरी रंगत में आने में समय लगने वाला है।

दिक्कतें कम नहीं

मनोज चतुर्वेदी।।

एक साल के लिए स्थगित हुए टोक्यो ओलिंपिक खेल अगले साल 23 जुलाई से शुरू होने हैं। मतलब यह कि अब नौ महीने से भी कम का समय बचा है। आम तौर पर ओलिंपिक खेलों से नौ महीने पहले तक टीम और खिलाड़ी सही शेप लेने लगते हैं लेकिन कोरोना वायरस के प्रकोप की वजह से देश में कुछ समय पहले ही खेल गतिविधियां शुरू हुई हैं। कुछ खेलों के ओलिंपिक तैयारी कैंप शुरू हुए हैं और कुछ खेलों के शिविर शुरू होने वाले हैं। इसका सीधा सा मतलब है कि हमारे खिलाड़ियों और टीमों की तैयारियां शुरुआती चरण में हैं और इनको पूरी रंगत में आने में समय लगने वाला है।

ओलिंपिक खेलों में हम भारत की पिछली सफलताओं को ध्यान में रखकर चलें तो हॉकी, निशानेबाजी, मुक्केबाजी, बैडमिंटन और कुश्ती खासे महत्वपूर्ण हैं। इन सभी खेलों के प्रशिक्षण शिविर आजकल प्रगति पर हैं। हॉकी का शिविर बेंगलुरु के साई केंद्र पर 19 अगस्त से चल रहा है। इसे अब आठ दिसंबर तक बढ़ा दिया गया है क्योंकि टीम का नीदरलैंड दौरा कोरोना की वजह से रद्द हो चुका है। खिलाड़ी आजकल मुख्य कोच ग्राहम रीड के निर्देशन में रंगत पाने में जुटे हुए हैं। रीड को लगता है कि इस साल

के अंत तक हमारी टीम फरवरी की अपनी स्थिति में पहुंच जाएगी। हालांकि इस दौरान टीम के किसी टूर्नामेंट में भाग लेने की संभावना नहीं है पर साल के शुरुआती दिनों में भारतीय टीम ने एफआईएच प्रो लीग में नीदरलैंड, बेल्जियम और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जैसा प्रदर्शन किया था, उसको दोहराकर वह टोक्यो ओलिंपिक में पदक की दावेदार बन सकती है।

यह सही है कि भारतीय हॉकी टीम अपना फॉर्म पाने में पूरी तरह से जुटी हुई है पर कोरोना वायरस ने उसकी मुश्किलें बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। पहले शिविर लगाने में दिक्कतें आईं और जब शिविर को लेकर हालात सामान्य हुे तो टीम के हाई परफॉरमेंस डायरेक्टर डेविड जॉन, एनालिटकल कोच क्रिस सिरेलो और फिजियो डेविड मैकडॉनल्ड स्वदेश लौट गए। इनके विकल्प के तौर पर नीदरलैंड के लिए विश्व खिताब जीतने वाली टीम में शामिल रहने वाले ब्राम लोमेंस और डेविड वान डे पॉल को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। मौजूदा स्थिति यह है कि कोरोना की गिरफ्त में आए कप्तान मनप्रीत सहित सभी छह खिलाड़ी ठीक होकर शिविर में शामिल हो चुके हैं। अब टीम को अगले साल की शुरुआत में एफआईएच प्रो लीग के मैचों में खेलकर अपनी तैयारियों का जायजा लेना है। इसमें उसका प्रदर्शन ही बताएगा कि पिछले 40 सालों से चला आ रहा हॉकी मेडल का सूखा इस बार खत्म होता या नहीं।

भारत के लिए पदक जीतने के लिहाज से निशानेबाजी भी महत्वपूर्ण स्पर्धा है। कोरोना की वजह से निशानेबाज इस महीने की शुरुआत तक अपने घरों पर ही अभ्यास कर रहे थे। अब ओलिंपिक के लिए क्वॉलिफाई करने वाले सभी 15 निशानेबाजों सहित कुल 32 निशानेबाजों के लिए राजधानी की कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में शिविर लगाया गया है। 22 अक्टूबर को शिविर शुरू होने से पहले निशानेबाजों और कोचों को एक हफ्ते के लिए क्वारंटीन में रखा गया।

सूडोकु नवताल- 5521

मध्यम

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5520 का हल

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

अपना ब्लॉग

पहलवानों से पदक जीतने की उम्मीद

मोहन। भारतीय मुक्केबाज लंबे समय तक ऊहापोह की स्थिति में रहने के बाद आखिरकार इटली में ट्रेनिंग की अनुमति पाने में सफल रहे। आजकल 10 पुरुष और 6 महिला मुक्केबाज वहां प्रशिक्षण ले रहे हैं। एमसी मैरिकॉम इस दल के साथ नहीं गई हैं। वह बाद में इससे जुड़ सकती हैं। मुक्केबाजों की तरह ही पहलवानों से भी पदक जीतने की उम्मीद लगाई जा रही है। 2008 के पेइचिंग ओलिंपिक से ही भारत कुश्ती में हमेशा पदक के साथ लौटता रहा है। पर रोहतक में पुरुष और लखनऊ में महिला पहलवानों का शिविर लगने से पहले कई पहलवानों के कोरोना पॉजिटिव आने से दिक्कतें आई। अब ये शिविर सही ढंग से चल रहे हैं। लखनऊ शिविर में महिला पहलवानों को प्लास्टिक के डमी पहलवानों के सहारे अभ्यास कराया जा रहा है।